मधुवन ओम् शान्ति अंक 258 फरवरी 2014

# पत्र-पुष्प

## निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
## (12-01-14)

विश्व कल्याणकारी, सर्व आत्माओं के गति सद्गति दाता प्राण प्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सर्व के शुभचिंतक, मन्सा सकाश द्वारा सर्व आत्माओं को सुख शान्ति की अंचली देने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी बाबा के नूरे रत्न ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - इस वरदानी अव्यक्त मास में चारों ओर तपस्या की बहुत अच्छी लहर चल रही है। सब तरफ से योग भट्ठियों के समाचार मिलते रहते हैं। सभी बाबा के बच्चे अन्तर्मुखी हो, एकव्रता बन, एक की लगन में मगन रह तपस्या कर रहे हैं। बाबा भी कहते बच्चे पहले चाहिए देह-अभिमान का त्याग, फिर आत्म अभिमानी स्थिति में रहने की तपस्या फिर सेवा तो आटोमेटिक होनी ही है।

इस नये वर्ष में तो प्यारे अव्यक्त बापदादा ने हम सबको वाह-वाह! रहने का दिव्य वरदान दिया है, साथ-साथ दृढ़ता सम्पन्न संकल्प भी कराया है। तो जरूर सभी अटेन्शन रख रोज़ अमृतवेले बाबा के वरदानों का अनुभव कर रहे होंगे। सदा यही चेक करना है कि इस नये साल में हमारे में क्या नवीनता आ रही है? अभी तो हर एक को साक्षात बाप समान बन, डबल लाइट स्थिति में रह दूर बैठी हुई आत्माओं को लाइट के साक्षात्कार द्वारा समीप लाना है।

हम सब तो पदमापदम भाग्यशाली हैं ही जो ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रख, फालो फादर करते पदमों की कमाई जमा कर रहे हैं। जैसे बाबा कहते ''जी बाबा'' कहने में बहुत मजा है, ऐसे बाबा की जो श्रीमत सिरमाथे, कभी कोई बात में क्वेश्चन उठता ही नहीं। भगवान ने अपनी पहचान के साथ, ड्रामा की इतनी वण्डरफुल नॉलेज दी है जो कभी भूल से और कोई सोच चल नहीं सकता। व्यर्थ चिंतन में हम अपना संकल्प, समय गंवा नहीं सकते। जिस घड़ी कोई भी दूसरी बातें सोच में हैं, तो बोलने चलने का आवाज़ ही चेंज हो जाता है, इसलिए अपने सोच-विचार को बुद्धि से साक्षी होके देखो, कैसा है? मुझे बहुत अच्छा लगता है, सोचने की जरुरत ही नहीं है क्योंकि कराने वाला बाबा बैठा है, ड्रामा बना पड़ा है तो मुझे क्या और क्यों सोचना है? मुझे तो सिर्फ सच्चा रहना है। हमारे मीठे अव्यक्त बाबा ने हम सबकी कितनी पालना की है, बाबा का कितना शुक्रिया मानें, 44 वर्ष! गुल्जार दादी को निमित्त बना करके कैसी छाप हर एक के दिल में लगाई है। तो अन्दर दिल में कितना रिस्पेक्ट है, रिगार्ड है। अब मुझे क्या करना है? इतना जो सुना है, वही सोचना है, वही करना है। अन्दर एक, बाहर दूसरा, कामचलाऊ रूप न हो। हमारे अन्दर-बाहर इतनी सच्चाई हो जो किसी को भी लगे यह जो कहता है, वही करता है। कथनी करनी में जरा भी फर्क दिखाई न दे।

देखो, अपने संगमयुग के पूर्वजों को कितने आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार होकर रहे हैं। अन्दर से उनकी शक्ति कितना काम कर रही है। गुप्त में भी कितनी सेवा कर रहे हैं तब तो इतनी वृद्धि हो रही है। कितना ब्राह्मणों का यह झाड़ बढ़ता जा रहा है। इस झाड़ में हरेक पत्ता शोभनिक है। हर एक की अपनी विशेषता है। तो विशेषता देखते, विशेषता वर्णन करते विशेष आत्मा बन ही जायेंगे। बोलो, यही अटेन्शन रहता है ना।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

*वी.के. जानकी*

# ये अव्यक्त इशारे

## मन्सा सेवा द्वारा वायुमण्डल का परिवर्तन करो

1) समय प्रमाण अब सेकण्ड में वेस्ट को खत्म कर बेस्ट का प्रभाव वायुमण्डल में फैलाना है। बेस्ट थॉट्स का वायुमण्डल ही अन्तिम समय को नजदीक लायेगा, इसलिए कोई भी कारोबार की बातें करनी भी पड़ती हैं तो उन्हें विस्तार से शार्ट करते जाओ तब मन्सा शक्तिशाली बनेगी और वायुमण्डल परिवर्तन होगा।

2) अपने मन-वचन-कर्म की पवित्रता से साइलेन्स की शक्ति को बढ़ाओ तब मन्सा शक्ति द्वारा किसी भी आत्मा की वृत्ति, दृष्टि को, किसी भी स्थान के वायुमण्डल को परिवर्तन कर सकते हो। स्थूल में कितनी भी दूर रहने वाली आत्मा हो, उनको सम्मुख का अनुभव करा सकते हो।

3) अभी समय है अपनी शक्तिशाली मन्सा द्वारा विश्व-परिवर्तन करने का इसके लिए मन के संकल्पों को सेकण्ड में फुलस्टाप लगाने का अभ्यास चाहिए। कोई भी बात को सोच-सोचकर बड़ा नहीं करो। यह क्यों आया, यह क्यों हुआ! पेपर आया है तो उसको करना है। वेस्ट और बेस्ट सेकेण्ड में जज करो और सेकेण्ड में समाप्त करो।

4) जैसे स्थूल सेवा में एवररेडी हो ऐसे मन्सा से भी जो संकल्प धारण करने चाहो उसमें भी एवररेडी बनो। जो सोचो वह उसी समय करो। इसको कहा जाता है मन्सा से भी एवररेडी। तो संस्कार परिवर्तन करने में, रुहानी सम्बन्ध सम्पर्क निभाने में, संस्कार मिटाने वा संस्कार मिलाने में एवररेडी बनो।

5) मन्सा सेवा करने के लिए सर्व के प्रति सदा ही श्रेष्ठ और निःस्वार्थ संकल्प हों, सदा पर-उपकार की भावना हो। अपकारी पर भी उपकार की श्रेष्ठ शक्ति हो। सदा दातापन की भावना हो। सदा स्व परिवर्तन, स्व के श्रेष्ठ कर्म द्वारा औरों को श्रेष्ठ कर्म की प्रेरणा देने वाले हो।

6) कोई कैसी भी आत्मा सम्पर्क में आये - चाहे सतोगुणी, चाहे तमोगुणी सभी के प्रति शुभ चिन्तक अर्थात् अपकारी के ऊपर भी उपकार करने वाले बनो। कभी किसी आत्मा के प्रति घृणा दृष्टि नहीं, क्योंकि जानते हैं कि यह अज्ञान के वशीभूत है अर्थात् बेसमझ बच्चा है। बेसमझ बच्चे के कोई भी कर्म पर घृणा नहीं होती है और ही बच्चे के ऊपर रहम वा स्नेह आयेगा।

7) हरेक यही संकल्प लो कि हमें शान्ति की, शक्ति की किरणें विश्व में फैलानी हैं। तपस्वी मूर्त बनकर रहना है, अब एक दूसरे को वाणी से सावधान करने का समय नहीं है, अब मन्सा शुभ भावना से एक दूसरे के सहयोगी बनकर आगे बढ़ो और बढ़ाओ।

8) अन्त समय में अपनी सेफ्टी के लिए मन्सा शक्ति साधन बनेगी। मन्सा शक्ति द्वारा ही स्वयं की अन्त सुहानी बनाने के निमित्त बन सकेंगे। उस समय मन्सा शक्ति अर्थात् श्रेष्ठ संकल्प शक्ति, एक के साथ लाइन क्लीयर चाहिए। तो बेहद की सेवा के लिए, स्वयं की सेफ्टी के लिए मन्सा शक्ति और निर्भयता की शक्ति जमा करो।

9) समय प्रमाण अब चारों ओर सकाश देने का, वायब्रेशन देने का, मन्सा द्वारा वायुमण्डल बनाने का कार्य करना है। अब इसी सेवा की आवश्यकता है क्योंकि समय बहुत नाज़ुक आना है।

10) यदि कोई संस्कार स्वभाव वाली आत्मा आपके पुरुषार्थ में परीक्षा के निमित्त बनी हुई हो तो उस आत्मा के प्रति भी सदा कल्याण का संकल्प वा भावना बनी रहे, आपके मस्तक अर्थात् बुद्धि की स्मृति वा दृष्टि से सिवाए आत्मिक स्वरूप के और कुछ भी दिखाई न दे, तब मन्सा सेवा कर सकेंगे।

11) जैसे बापदादा को रहम आता है, ऐसे आप बच्चे भी मास्टर रहमदिल बन मन्सा अपनी वृत्ति से वायुमण्डल द्वारा आत्माओं को बाप द्वारा मिली हुई शक्तियां दो। जब थोड़े समय में सारे विश्व की सेवा सम्पन्न करनी है, तत्वों सहित सबको पावन बनाना है तो तीव्र गति से सेवा करो।

12) अपनी शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वृति, श्रेष्ठ वायब्रेशन द्वारा किसी भी स्थान पर रहते हुए मन्सा द्वारा अनेक आत्माओं की सेवा करने के लिए, वायुमण्डल को परिवर्तन करने के लिए लाइट हाउस, माइट हाउस बनना है। इसमें स्थूल साधन, चान्स वा समय की प्रॉब्लम नहीं है। सिर्फ लाइट-माइट से सम्पन्न बनने की आवश्यकता है।

13) मन्सा सेवा के लिए मन, बुद्धि व्यर्थ सोचने से मुक्त होना चाहिए। 'मनमनाभव' के मन्त्र का सहज स्वरूप होना चाहिए। जिन श्रेष्ठ आत्माओं की श्रेष्ठ मन्सा अर्थात् संकल्प शक्तिशाली है, शुभ-भावना, शुभ-कामना वाली है वह मन्सा द्वारा शक्तियों का दान दे सकते हैं।

14) हर समय, हर आत्मा के प्रति मन्सा स्वतः शुभभावना और शुभकामना के शुद्ध वायब्रेशन वाली स्वयं को और दूसरों को अनुभव हो। मन से हर समय सर्व आत्माओं प्रति दुआयें निकलती रहें। मन्सा सदा इसी सेवा में बिजी रहे। जैसे वाचा की सेवा में बिजी रहने के अनुभवी हो गये हो। अगर सेवा नहीं मिलती तो अपने को खाली अनुभव करते हो। ऐसे हर समय वाणी के साथ-साथ मन्सा सेवा स्वतः होती रहे।

15) जब मन्सा में सदा शुभ भावना वा शुभ दुआयें देने का

नेचुरल अभ्यास हो जायेगा तो मन्सा आपकी बिजी हो जायेगी। मन में जो हलचल होती है, उससे स्वत: ही किनारे हो जायेंगे। अपने पुरुषार्थ में जो कभी दिलशिकस्त होते हो वह नहीं होंगे। जादूमन्त्र हो जायेगा।

16) अभी मन्सा की क्वालिटी को बढ़ाओ तो क्वालिटी वाली आत्मायें समीप आयेंगी। इसमें डबल सेवा है - स्व की भी और दूसरों की भी। स्व के लिए अलग मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। जितना स्वयं को मन्सा सेवा में बिज़ी रखेंगे उतना सहज मायाजीत बन जायेंगे। सिर्फ स्वयं के प्रति भावुक नहीं बनो लेकिन औरों को भी शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा परिवर्तित करने की सेवा करो।

*शिवबाबा याद है ?* 30-3-12 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

## ''सदा श्रीमत पर चलते रहो तो हार्ट, हेड और हैण्ड सब ठीक काम करेंगे''

(दादी जानकी)

बाबा का प्यार अच्छा बना देता है, मीठा बना देता है। मीठा जो है वो अच्छा है और अच्छा जो है वो मीठा है। अच्छा माना जिसको कोई प्रकार की कोई इच्छा न हो क्योंकि कोई भी इच्छा होती है, जब वो नहीं पूरी होती है तो चेहरा चेन्ज हो जाता है। सबसे अच्छी बात है - मैं बाबा का बच्चा हूँ, खुद को लगता है बहुत अच्छा बच्चा बनना है। मुझे तो कोई इच्छा नहीं, सदा राज़ी है, खुश है। घर में, दफ्तर में, ईश्वरीय परिवार में सभी ऐसे राज़ी खुशी रहते हो ना क्योंकि बाबा से अलौकिक खुशी मिली है, जो दुनिया में कोई नहीं दे सकता है। इस अलौकिक खुशी में शक्ति आती है, यह शक्ति कर्मबन्धन से मुक्त कर देती है। एक बाबा है तो सब कुछ है।

एक तो विकर्म करें, दूसरा छिपायें तो उसका 100 गुना दण्ड के रूप में हो जाता है। अगर कोई विकर्म करके सच बतला देवे तो बाबा आधा माफ कर देता है क्योंकि माफ करने में यह बाबा बड़ी दिल वाला है। जो माफी नहीं मांगता है तो वो भूल में भूल करता रहता है। जो थोड़ी भूल करता है वो श्रीमत पर नहीं चलता है। जो श्रीमत पर नहीं चलता है तो उसका हार्ट, हेड, हैण्ड ठीक से काम नहीं करेगा। दिल दिमाग, दृष्टि वृत्ति, हाथ पाँव नम्बरवार हैं। कदम कदम पर पदम की कमाई उसी की होगी जिसे फॉलो फादर करने का लक्ष्य होगा। एक श्रीमत पर चलना, दूसरा फॉलो फादर करना, तीसरा नियम प्रमाण चलना, ट्रैफिक कन्ट्रोल कभी मिस नहीं करना। शुद्ध आहारी रहना, कभी भी अशुद्ध वायब्रेशन वाला बनाया हुआ खाना नहीं खाना। सदा ही बाबा की याद में पकाया हुआ खाना खाना। कभी कोई फैशन का ख्याल भी न आवे। सच्चाई, सफाई, सादगी तीनों को जीवन में रखें। अन्तर्मुखी हो कार्य करते एकांतप्रिय बनें माना एक की गहराई में रहें। आवाज़ में न रहें।

जो भी काम करो शुद्धि और सच्चाई से करो। बोलने में सच्चाई, व्यवहार में सच्चाई, झूठ नहीं बोलेंगे। कभी भी कोई झूठ बोले तो उसको पाप मानो। बाबा से इतने सच्चे रहो जो बाबा प्यार में कब किश करना मिस न करे। बाबा के किश करने से बाप जैसे अच्छे बन जाते हैं। तो बाबा का प्यार अथाह सुख देने वाला है। ऐसों को बाबा बहुत अच्छी शिक्षायें भी देता है। ज्यादा सोचने की आदत छोड़ो क्योंकि उसमें समय बहुत वेस्ट जाता है। करो ज्यादा माना अच्छा करो तभी कहेंगे बाबा कराता है। सोच में लगेगा मेरे को करना है और नहीं सोचेंगे तो बाबा कराता है। सोचने में कब गलत भी करेंगे, मनमर्जी से करेंगे या एवाइड करेंगे और न सोच में मेरे को टाइम नहीं है इसलिए थोड़ा भी सोचा तो श्रीमत सिरमाथे पर हो, वो नहीं होगा। तो अच्छा करो, भला करो जितना बाबा करा रहा है उतना करो, तो कभी थकेंगे नहीं। जो गलत काम करते हैं वो थकते हैं, दूसरा कोई अपमान करता है तब थकावट होती है इसलिए थकावट भी सोच का ही परिणाम है क्योंकि सोच के कारण थकते हैं इसलिए बाबा स्पष्ट सुनाता है तुमको यह करना है, यह नहीं करना है, यह सच है, यह झूठ है, यह पाप है यह पुण्य है, यह राँग है यह राईट है, यह सब बाबा के बच्चों को पता तो है ना। अगर कोई बाबा का बच्चा यह सब बातें नहीं जानता है तो वो सोचता है। जो जानता है वो सच्चा होगा, जो सच्चा होगा वो एवररेडी होगा, आलराउण्डर होगा, एक्यूरेट होगा। झूठा जो होगा वो अधूरा करेगा। दिखावे वाला करेगा, अगर मान न मिला तो गुस्सा आयेगा। फिर दुबारा बोलेंगे तो कहेगा मैं नहीं करता, जाकर दूसरों को बोलो। तुमको जिनका काम अच्छा लगता है उनको बोलो... उसकी भाषा अच्छी नहीं है। तो अपने को सम्भालना है, मेरी भाषा ऐसी न हो जो बाबा सुख देवे बहुत

ऊंचा अलौकिक और भाषा मेरी लौकिक हो साधारण हो तो वो बेहद का सच्चा सुख नहीं मिलेगा। जब स्वयं को ही ऐसा सुख नहीं मिलता है तो औरों को क्या देंगे? सुखदेव से सुख मेरे को ही नहीं मिला तो औरों को कैसे देंगे? इसलिए मेरे को दु:ख का नाम-निशान न हो, क्योंकि मेरा बाबा दु:ख हर्ता, शान्ति दाता है। अब सिर्फ अपने से इतना ही पूछो कि मैं कौन? आत्मा हूँ पर कौनसी आत्मा हूँ? दु:ख देने वाली आत्मा हूँ या कोई दु:ख दे देता है तो मैं ले लेती हूँ? मैं वो आत्मा हूँ नहीं, वो आत्मा अच्छी नहीं होती। मैं आत्मा हूँ, बाबा की हूँ, बाबा ने मेरे सारे दु:ख खत्म कर दिये। शान्ति और प्रेम में सम्पन्न बना दिया।

तो बाबा हमको स्नेह से ऐसी मूर्त बनाता है, बच्चे सदा मेरे हो, बाबा मैं तेरा हूँ, तुम मेरे हो बस, इसी स्नेह में खोये रहो तो हमारे में जो कमी है, अपने आप धुलाई होती जा रही है या मैंने पास्ट में कोई भूल की भी है वो विकर्म विनाश हो रहे हैं, स्नेह में सच्चे बन रहे हैं, साफ बन रहे हैं। बाबा ऐसी हमारी सच्चाई सफाई को देख कहता है यह मेरा सच्चा बच्चा है। बच्चा हो तो ऐसा। ऐसे बाप के बच्चे बाप का नाम बाला करने वाले, बाबा फिर ऐसे बच्चों का नाम बाला करता है। समझा। हमारे अन्दर दिल में है कि हम बाबा का नाम बाला करें, बाबा कहेगा ऐसे बच्चों का मैं भी नाम बाला करूंगा। जैसे हमारी दादियां सब स्नेह में सम्पन्न हैं ना। तो अभी आप भी प्रैक्टिकल देख, ईश्वरीय स्नेह में ऐसे सम्पन्न दिखाई पड़ो तो औरों को भी स्नेह में सम्पन्न बनने का सैपलिंग लगता जाये, जो कोई भी कारण से कम न रह जाये। सच्ची दिल रखने से बाबा बहुत खुशी देता है। अच्छा।

# आई टी माना अन्दर से अपने को ट्रान्सपैरेन्ट बनाना

(आई टी ग्रुप के प्रश्न-दादी जानकी जी के उत्तर)

सच्चाई और प्रेम दोनों जब आपस में मिल जाते हैं तो जादू का काम होता है। खुशी और शक्ति को पैदा कर लेते हैं। सच्चाई माँ, प्रेम बाप है? या प्रेम माँ है सच्चाई बाप है? सच्चाई, प्रेम, खुशी और शक्ति चारों आपस में मिलके काम कर रहे हैं और हम देख रहे हैं। सेम वही बात रोज़ सुनते सुनते देखते देखते... इसलिए कुछ नवीनता, वैराइटी हो तो महफिल में जल उठी शमा हो जाये।

**प्रश्न:-** दादी, आज आपको देख करके कोई यह नहीं सोच सकता कि दो दिन पूर्व आपकी तबियत कैसी थी और फिर बाबा के सन्देश में भी यह था कि आप नहीं चल रहे हैं, बाबा आपको चला रहा है तो इसमें आपका क्या अनुभव है?

**उत्तर:-** वो डॉक्टर से पूछो। अचानक कराची से आई हूँ, सुबह को 9 बजे घर में पहुँची, गुल्जार दादी मिली, मैंने कहा मुझे छोड़ दो ना। निर्वैर भाई, बनारसी भाई भी पूछने आये। अन्दर तो मेरी भावना यह थी कोई पूछने भी न आवे। वहाँ 3 दिन बहुत अच्छी महफिल थी। यह भी प्रकृति (शरीर) है, मैं अधीन न रहूँ। प्रकृति मुझे न अधीन बनावे, न मैं अधीन बनूं। साइलेंस में आवाज आया कि एम्बूलेंस आई है, तुमको चलना है, एम्बूलेंस शब्द सुनकर मेरे को अच्छा नहीं लगा। परन्तु ड्रामा, ठीक है। तो बहुत सारे डॉक्टर मिलने आ रहे हैं, डॉक्टरों से मिलने के लिये जैसेकि यह सब खेल हुआ है और गुल्जार दादी कह रही है, सुन रही हो? बाबा ने क्या कहा? बाबा क्या कह रहा है? हाँ। तन से सेवा करने के लिये जो सीन सामने आवे, कभी भी यह नहीं कहो कि यह बात मुश्किल है। आया है सीन, चलो अन्दर श्वांस में थोड़ी तकलीफ थी। डॉ. ने पूछा तो मैंने कहा हंसा को पूछो। हंसा घड़ी-घड़ी कहती क्या? मुझे पता नहीं क्या बताऊं। बाबा कहता है बाबा तुम्हारा साथी है तो साक्षी हो करके जो सीन सामने आती है वो तुम खुशी से प्ले करो। हॉस्पिटल का पार्ट भी प्ले.. यह भान नहीं आया कि हॉस्पिटल की खटिया पर लेटी हूँ। तो बुद्धि की कमाल है ना। वायुमण्डल को अच्छा बनाने की भावना जो है, वो बहुत अच्छा काम कराती है। हॉस्पिटल का वायुमण्डल डॉक्टरों को ऐसे देखने को तो मिले ना, मैंने भी डॉ. को तीन गोली सदा ही खाने को कहा। फिर इंजेक्शन लगाये? पहले मैं आपको इंजेक्शन लगाऊं फिर आप मुझे लगाना। तो मुझे लगाया या नहीं लगाया पता ही नहीं पड़ा, याद नहीं पर डॉ. को तो मैंने लगा दिया। फौरन मुस्कराने लगा। तो यह अनुभव अच्छा है ना। बाबा, आपने इतना सिखाया है, इतना समझाया है, इतना दिया है जो अनुभव सागर समान हो गया है। वेद पढ़ने वाले सुना देंगे पर अनुभव सागर समान है।

**प्रश्न:-** कराची में आपको टॉपिक दी गई थी ''थिंक लेस डू मोर''

**उत्तर:-** कोई भी प्रकार का जरा भी सोच में होंगे तो हमारी वृत्ति दृष्टि बाबा समान नहीं हो सकती है। इतना सब ठीक हो गया है तो आगे भी सब ठीक होगा ही, अन्दर से यह विश्वास जो है वो सोचने नहीं देता है। बाबा में विश्वास, ड्रामा में हर सीन कल्याणकारी है, उसमें सफल होना। लौकिक से सारे लाईफ में मैंने टाईम, मनी, एनर्जी व्यर्थ बातों में वेस्ट नहीं किया है, तो भगवान खुश, हमारी दादियाँ भी खुश तो हमारे सेवासाथी भी खुश, सब मेरे से

खुश उसकी एनर्जी काम कर रही है, बाकी मेरे में एनर्जी कहाँ से आती थोड़ेही है। सोलार एनर्जी को भी पहले वेस्ट जाने नहीं देते, बिखरी हुई एनर्जी को इकटठा करके स्टोर करके फिर सोलार एनर्जी को जहाँ चाहिए वहाँ यूज़ करते हैं। यहाँ फिर थिकलेस से सोल एनर्जी बढ़ती है। ज्यादा क्या सोचना है, आपने कहा मैंने माना आपस में रिस्पेक्ट है ना। जैसे हमारे यज्ञ के फाउण्डेशन ही हैं – बाबा, मम्मा, दीदी, दादी।

आई टी माना अन्दर से अपने को कैसे ट्रांसपेरेन्ट बनाया जाये, इसके लिये अपने को कौनसी ट्रेनिंग दे रहे हैं। तो यह सोचना नहीं है, पर जैसे बाबा श्रीमत देता है, डायरेक्शन देता है प्रैक्टिकल करके साकार में दिखाया है, ऐसे सिर्फ करना है। तो सोचने की बात ही नहीं है। यह करने का जो तरीका है वो बहुत सहज है, आज योग नहीं लगा, आज यह काम नहीं हुआ, मुश्किल है यह शब्द मुख से निकलें, अफसोस है। नहीं, सब सहज है। सिर्फ हम जितना बाबा की बातों पर अटेन्शन रखते हैं उतना बाबा भी मेरा ध्यान रखता है, उतना पौ-बारा है। पौ-बारा माना अच्छे स्टूडेन्ट बन अच्छी स्टडी कर टीचर का ध्यान अपने ऊपर खिचवाना, पर्सनल ऐसी हमारी जीवन हो, उसमें भी चारों सबजेक्ट में एक ही टाइम चेक करो कि कोई मुझे देखे, समझे कि यह इस सबजेक्ट में इतनी अच्छी है और इस सबजेक्ट में फुल मार्क्स नहीं लेगी। यह इतना ध्यान रखने से बाबा देखता है, इसका ध्यान अपने ऊपर अच्छा है। तो बाबा चारों सबजेक्ट में साथ देता है। ज्ञान बाबा का दिया हुआ है और कहाँ से लाया नहीं। यह ज्ञान जब तक मंथन न करूँ ना, तो लगेगा जैसे रूखी सूखी रोटी खा ली। ज्ञान इतना अच्छा है जिससे योग लग जाता है। धारणा लाईफ में ऑटोमेटिक आ जाती है, सेवा हो जाती है। तो ज्ञान मंथन की बहुत वैल्यु है। मंथन करने में, सोचने की थोड़ा भी जरुरत नहीं है। इसमें सबका सहयोग अच्छा मिल रहा है तो सब काम सहज हो रहे हैं।

**प्रश्नः-** कहीं जाना होता है तो उसके लिये कुछ तैयारी तो करनी पड़ती है ना, तो उसमें कैसे कह सकते हैं कि डोंट थिंक?

**उत्तरः-** अगर मेरे को सोचने की आदत होती ना तो आज मेरे जितना कोई ट्रेवेलिंग कर न सके। समेटने और समाने की शक्ति न होने के कारण कहेंगे मुझे तैयारी करनी है, टाइम चाहिए मुझे... यह आवाज ऐसा होता है जैसे गृहस्थी का। कईयों की सोचने की आदत होती है, एक मिनट में पता है - यह घर का कपड़ा है, यह बाहर का कपड़ा वा चप्पल हैं, बस। बैज भी हमारा कभी गुम नहीं हुआ होगा, कभी टूटा हुआ नहीं होगा! मेरे बैज की पिन भी स्पेशल है, सबकी होगी ओम् शान्ति मेरी है शिवशक्ति। तो वास्तव में हम सदा ही तैयार हैं, क्या करना है, दो रोटी ले करके जाना है, बस। मुझे रोटी बनानी है, मुझे खाना है, यह आदत है तो इसको सीधा ही कहा जाता है गृहस्थी नेचर। जो फ्री एकदम हल्का है तो जल्दी तैयार होने में सहयोग मिल जाता है तो और जल्दी हो जाता है। पर आवाज़ में आयेंगे तो सामने वाले भी कहेंगे इतना टाइम लगेगा क्या तैयारी करने में! लेकिन यह ध्यान रखो जैसा कर्म मैं करेंगी मुझे देख और करेंगे। यह इतनी गहरी बात है कर्म, वाणी, संकल्प, इससे भी गहरी बात अगर मेरी वृत्ति शान्त, मित्रता भाव वाली, रूहानियत वाली वृत्ति से व्यवहार है, वन्डरफुल है। जिन्होंने बाबा, मम्मा, दीदी, दादी को देखा है, उनकी सूरतें बतावे कि हमारे पूर्वज ऐसे थे। उन्हीं के फाउण्डेशन से ही यह सारा चल रहा है। त्याग बिगर रीयल तपस्या नहीं हो सकती है। हाँ, योग-भट्ठी हो गई लेकिन विकर्म विनाश हो गये?

कुछ भूल होती है तो जो श्रीमत पर चलने वाले हैं उनको सुना दो। यह तो जानते हो ना श्रीमत पर कौन चलते हैं? उनको सुना दो। लेकिन यह भी सच है कि साकार बाबा को कोई पत्र में सच बताता था, तो बाबा ऐसे पत्र उठाके पढ़ता भी नहीं था, सेकेण्ड में कहता बच्चे, भूल जा। फिर से नहीं करना। यह बहुत ध्यान देना पड़ेगा। अगर फिर फिर अभी भी भूल करते रहेंगे, बतायेंगे नहीं तो पद भी कम, सजायें भी ज्यादा, संगमयुग का जो अमूल्य समय गंवाया तो पश्चाताप बहुत करना पड़ेगा। ऐसी घड़ी अच्छी नहीं, तो अपने ऊपर मेहरबानी करो, पश्चाताप की घड़ी न आवे इसके लिये सेल्फ रियलाइजेशन से रियल्टी की रॉयल्टी में रहे। किसके लिये भी कोई ख्याल किया ना, यह अच्छा नहीं करता यह गलती है। अपने उपर रहम भावना से यह अच्छा नहीं करता, यह ख्याल आने नहीं देती हूँ। हाँ, यह भावना रखती हूँ कि आज नहीं तो कल अच्छा करेगा। भले टाईम लगेगा। दूसरा मैं यह कहूँ कि आपके साथ मैं नहीं चल सकती हूँ तो दोष किसका? इस प्रकार का जो ख्याल आता है, उससे हिसाब-किताब बन जाता है। आजकल ज्ञान मोटे रूप में सबके पास है, पर महीन रूप में मैं इनके साथ नहीं चल सकता/सकती हूँ। थोड़ा समय साइलेंस में जाके विचार करो यह शब्द किसके मुख से निकल रहा है? सबका दोष इकट्ठा करके अपने को राइट समझके मैं नहीं चल सकता हूँ, वो बुरा है, उसको चेंज होना चाहिए इस प्रकार की थिंकिंग करना, क्या यह थिंकिंग योगी की है? सेवा करते यह सोचना है कि यह सोच किस प्रकार का है? औरों का दोष देखने से अपने को फ्री करो, तो जो बाबा ने बोला वृत्ति से सेवा करो वो हो सकेगी। बाबा अन्दर ही अन्दर ट्रेनिंग देता है, बच्चे यह अटेन्शन दो। अन्दर बाबा को साथी बनाके बाबा जो करता कराता है, कई काम मैं कहेंगी हमने कुछ नहीं किया है, बाबा ने किया है। सिर्फ अपने को देख, खुदा को देख तो खुद में खुदा की खिदमत कैसे सेवा करता कराता है, वो देखने में बड़ा मजा है। मैं कुछ नहीं करती देखने में मजा आता है, यह कैसे हुआ? वन्डर है बाबा। हार्मनी से हुआ। ओम् शान्ति।

# दिल्ली - ओ. आर. सी. में गुल्जार दादी जी के साथ प्रश्न-उत्तर

**प्रश्न:-** दादी जी बाबा कहते हैं फॉलो फादर करो, तो आपने अपने जीवन में ब्रह्मा बाप को कदम-कदम पर फॉलो किया है। दादी जी आपके अन्दर जो बेहद की वैराग्य वृत्ति है, वह कौन-कौन से कदमों को अपनाने से आई है?

**उत्तर:-** बाबा को तो हमने बचपन से ही 9 वर्ष की आयु से देखा। बाबा की हर चलन में न्यारा और प्यारापन था। अभी-अभी न्यारा और अभी-अभी प्यारी स्थिति में हैं। प्यार भी दिल का, दिल का प्यार दिल को छू लेता है। बाबा अशरीरी अवस्था का अभ्यास एवं आत्मिक स्थिति का अभ्यास जो करते थे वह हमें अनुभव होता था और हमने भी बाबा से यही सीखा।

**प्रश्न:-** दादी जी, बाबा ज्ञान की कौन सी प्वाइन्ट बुद्धि में रखते थे?

**उत्तर:-** मुख्य तो यही थी कि अशरीरी बनना है। अशरीरी बनकर हमको बोलना भी है और देखना भी है। बाबा की अशरीरी स्थिति होने के कारण सहज ही अशरीरी बन जाते थे, मेहनत नहीं करनी पड़ती थी। अशरीरी स्थिति में बहुत सुख मिलता था, भल बोलते भी थे लेकिन अच्छे-बुरे के प्रभाव से दूर आत्मिक स्थिति में रहते थे।

**प्रश्न:-** दादी जी, आप कराची में थे तो वहाँ आपको राजकुमारी जैसी पालना मिलती थी, और यहाँ आबू में आने से बेगरी पार्ट शुरु हो गया, आपको दोनों ही बात का नशा था, कौन-सी बात आपकी धारणा में रही, जो दोनों में कोई कमी नहीं आई?

**उत्तर:-** मुख्य फाउण्डेशन था बाबा का प्यार। बाबा का प्यार ही सब कुछ था, खाना-पीना जो कुछ था वो जैसे बाबा में ही था। थोड़ा आबू में फर्क पड़ा लेकिन बाबा सेकेण्ड में ऐसे प्यार करता था, जो 36 प्रकार के भोजन भी उसके आगे कुछ नहीं थे। चाहे भोजन नहीं मिला लेकिन बाबा की दृष्टि ऐसी थी जैसे सब कुछ मिल गया। बाबा चक्कर लगाते थे तो बाबा के हाथ का ईशारा और प्यार जैसे सब कुछ था। कराची से भी ज्यादा बाबा की दृष्टि और प्यार ऐसे था मानो सब कुछ मिल गया। बाबा दरवाजे पर भी खड़े होकर दृष्टि देते थे, तो वह बाबा की दृष्टि और सकाश ऐसे था जैसे पेट भर गया। शरीर के हिसाब से तो खाते थे। रोज़ बाबा आते थे, पहले-पहले दृष्टि देते थे और फिर उस ही दृष्टि से खाना खाते थे।

**प्रश्न:-** दादी जी, कराची का नशा कैसा था?

**उत्तर:-** कराची में हमें नशा था कि हमें कौन मिला है! हम छोटे थे तो हमें लगता था हमारा इतना बड़ा भाग्य है जो भगवान आकर हमें खुद उठाते हैं। बाबा हमारी एक-एक कमी भर देता था। इतना प्यार कौन करेगा! क्योंकि दिल का प्यार था। दिल का प्यार दिलाराम बाप ही दे सकता है। कोई कमी नहीं लगती थी। ऐसे लगता था हम भगवान की गोदी में पल रहे हैं।

**प्रश्न:-** दादी जी, आपने साइलेन्स की शक्ति को बहुत धारण किया है, बाबा ने आपके द्वारा कई राज़ भी खुलवाये हैं, आपने ब्रह्मा बाबा की सम्पूर्ण मूर्ति का भी साक्षात्कार किया, आपका उस समय का क्या अनुभव है?

**उत्तर:-** जब से साक्षात्कार का पार्ट शुरु हुआ तो चलते-फिरते अपने को अशरीरी अनुभव करती थी। शरीर के भान में आने की फुर्सत ही नहीं होती थी, चलते-चलते यही नशा रहता था कि बाबा ने हमें क्या बना दिया! बाबा ही बाबा नैनो में समाया हुआ रहता था।

**प्रश्न:-** दादी जी, आप उस समय छोटे थे फिर भी साक्षात्कार के राज़ कैसे समझ जाते थे?

**उत्तर:-** बाबा के सम्पूर्ण स्वरूप के साक्षात्कार में मुझे थोड़ी सी तकलीफ हुई लेकिन साक्षात्कार अव्यक्त बाबा का था। बाबा पूछते वो कैसे हैं? वो कैसे उठते हैं? कैसे बैठते हैं? बाबा मेरे से ही प्रश्न करते, मैं जितना समझ सकती थी उतना ही जवाब देती थी। बाबा ने हमें क्लिफटन में रखा था। बृजइन्द्रा दादी निमित्त थी, वह पूछती थी क्या देखती हो? बृजइन्द्रा दादी जी के द्वारा बाबा हमसे पूछते थे, जो मैं बोलती थी वो बृजइन्द्रा दादी स्पष्ट करती थी। बाबा पूछते थे मैं तो नीचे बैठा हूँ फिर ऊपर ब्रह्मा कहाँ से आया? ये तो नई बात थी कि ब्रह्मा बाबा बैठा है और मैं अव्यक्त ब्रह्मा को ऊपर देखती थी।

**प्रश्न:-** दादी जी, अपने यज्ञ में दीपावली का क्या महत्व है?

**उत्तर:-** बाबा हमेशा यही समझाते थे कि एक दीपक जगा हुआ रखो और एक दीपक बुझा हुआ रखो, तो जगे हुए दीपक की तरफ ही सबका स्वत: आकर्षण जाता है, आपकी आत्मा को भी शिव बाबा इस समय ब्रह्मा बाबा द्वारा जगा रहे हैं, इसलिए आपकी आत्मिक स्मृति का यादगार ही ये दीपमाला है। आत्मा जगी है माना दीपक जगा है। आत्मा के ज्ञान-योग की शक्ति ही लाइट-माइट है।

**प्रश्न:-** दादी जी, यज्ञ स्थापना का दिवस दीपावली के रूप में कैसे मनाते हैं?

**उत्तर:-** बाबा देखते थे जो बहुत सुस्त बच्चे होते, तो बाबा कहते थे अगली दीवाली तक जग जाना। जगा हुआ दीपक ही

अच्छा लगता है। बुझा हुआ दीपक किसी को भी अच्छा नहीं लगता। छोटी-छोटी मिसाल देकर बाबा कहते थे तुम अभी बुझी हुई हो या जगी हुई हो! कहते थे अभी जगे रहना बुझना नहीं। बाबा बड़े स्नेह से समझाते थे, ये मेरे बच्चे राजा बनेंगे। रिगार्ड ऐसे देते जैसे बड़ों को देते हैं। रिगार्ड ही नहीं लेकिन प्यार भी। बस उस प्यार ने बाबा का बना दिया और प्यार से सहज ही ज्ञान की धारणा होती गई।

**प्रश्न:-** दादी जी, आपके सामने 18 देशों के भाई-बहनें बैठे हैं, और भारतवासी भी हैं, तो दादी जी आप इनको अगली दीवाली के लिए क्या शिक्षा देंगे?

**उत्तर:-** अगली दीवाली तक सभी अपने-अपने देश में अनेक आत्माओं को जगाना, अनेकों की ज्योति जगाकर बाबा के पास लेकर आना।

**प्रश्न:-** दादी जी, आज के दिन क्या पर्सनल धारणा करेंगे?

**उत्तर:-** पर्सनल तो यही है कि बाबा कहते हैं आजकल व्यर्थ संकल्प ज्यादा चलते हैं, अशुद्ध कम हो गये हैं लेकिन व्यर्थ भी तो समय को वेस्ट करते हैं। तो बाबा कहते हैं मन को बिजी रखो। मनमनाभव सेकेण्ड में हो जाओ, ऐसे नहीं कि टाइम लगे। बाबा कहा और मन बाबा में लग गया। अन्त में जो पेपर होना है सेकेण्ड का ही होना है। अभी तो टाइम लगता है। लेकिन अन्त में सेकेण्ड में मनमनाभव। ऐसे नहीं कि मन यहाँ-वहाँ जाये। मन के व्यर्थ संकल्प ही गुह्य प्वाइन्टस अर्थात् गहनता का आनन्द नहीं लेने देते इसलिए मन को कन्ट्रोल करो तो मनमनाभव हो जायेंगे। साकार में बाबा ने हमें सदा प्यार से पालना दी। पालना बाबा ने बहुत अच्छी दी, छोटे थे अन्जान थे, 8-9 वर्ष के उन्हों को योग्य बनाना बाबा की मदद थी।

**प्रश्न:-** दादी जी, हम कैसे आप समान बनें?

**उत्तर:-** अभी से ही अव्यक्त बाबा को अपने दिल में रखो, तो और कोई भी बात मन में नहीं आयेगी। कोई न कोई बात का टेन्शन करते हो तो तंग हो जाते हो, और बाबा मन में होगा तो मन कहीं नहीं जायेगा। हमारा अटेन्शन भी रहेगा कि व्यर्थ संकल्प न आवे इसलिए मन को बिजी रखो। सुबह से लेकर शाम तक मन की दिनचर्या बनाओ। तो बहुत सहज हो जायेगा।

प्रश्न:- दादी जी, हमारा ऐसा कौन-सा पुरुषार्थ हो जो हम लास्ट सो फास्ट जा सकें?

**उत्तर:-** आजकल बाबा चाहता है कि हरेक बच्चा निर्विघ्न और तीव्र पुरुषार्थी हो। पुरुषार्थ में जो विघ्न पड़ते हैं तो तीव्र पुरुषार्थी उनको पार कर लेते हैं। यह याद रखो कि मैं महावीर हूँ। बाबा जो रोज़ मुरली में कहता है वह करना ही लास्ट सो फास्ट जाने का सहज पुरुषार्थ है।

**प्रश्न:-** दादी जी, आपने अपने जीवन को बाबा की श्रीमत अनुसार बनाया है, जो हम आपको देखकर अनुभव करते हैं। दादी जी आपने ऐसा कौनसा पुरुषार्थ किया है, जो आप सबके लिए दर्शनीय मूर्त बन गये?

**उत्तर:-** मेरा शुरु से यही पुरुषार्थ रहा कि बाबा ने जो कहा हमने किया। हम सुनते तो रहते हैं बाबा ने यह कहा, लेकिन मैंने किया कितना! जो कहा वो किया? सहज पुरुषार्थ यह है कि बाबा ने कहा निरन्तर योगी बनो, हमारा योग शिवबाबा से है, बाकी का तो सन्यास है। दिल में किसको रखा है? बाबा को। जब दिल में बाबा है तो यहाँ-वहाँ की बातें आ नहीं सकती। जब हमने दिल में किसी मूर्ति को रख लिया है, तो हम उस पर फूल-हार के सिवाए और कुछ नहीं चढ़ा सकते। वैसे भी जब बाबा हमारे दिल में है तो दिल में और कोई बात रह नहीं सकती। यह सहज पुरुषार्थ हमारा रहा है। रोज़ दृढ़ संकल्प करो और रात को चेक करो कि मेरा संकल्प कहाँ तक सफल रहा! बाबा से वायदा करो आज जो कमी रह गई, बाबा हम अवश्य ही इसको ठीक करेंगे। तो वायदे से फायदा बहुत है।

**प्रश्न:-** दादी जी, बाबा ने जो हमें सेवा दी है कि अपनी वृत्ति के द्वारा औरों की वृत्तियों का परिवर्तन करना है, दादी जी बाबा ने और कुछ नहीं कहा सिर्फ वृत्ति ही क्यों कहा, इसका भाव क्या है?

**उत्तर:-** क्योंकि वृत्ति से ही कृत्ति बनती है। बाबा ने यह भी कहा है कि अभी आत्माओं में ज्ञान सुनने की क्षमता बहुत कम है, इसलिए अभी वृत्ति द्वारा उनकी वृत्ति को परिवर्तन करो। दूसरों की वृत्ति को हम तभी बदल सकते हैं जब अपनी वृत्ति शक्तिशाली होगी क्योंकि सबसे पहले वृत्ति ही चंचल होती है, इसलिए वृत्ति से वृत्ति का परिवर्तन आवश्यक है।

**प्रश्न:-** दादी जी, आप बाबा के बहुत करीब हैं, बाबा दिल्ली की रिज़ल्ट क्या बताते हैं? बाबा दिल्ली से क्या चाहते हैं, कृपया हमें बतायें।

**उत्तर:-** बाबा कहते हैं कि दिल्ली बाबा का दिल है इसलिए बाबा यही चाहते हैं कि दिल जो चाहे दिल्ली वही करे। दिल्ली की तरफ सबकी नजर है। दिल्ली को पवित्र बनाने में हम सब निमित्त हैं इसलिए बाबा अटेन्शन दिलाते हैं। दिल्ली पर बाबा को विश्वास है कि दिल्ली वालों ने जो दृढ़ संकल्प किया है वह अवश्य करेंगे। दिल्ली ही राजधानी होनी है। दिल्ली को ऐसा पुरुषार्थ करना है जो कल कुछ भी हो जाये तो भी राजधानी तैयार हो, इसलिए आज कोई भी कमजोरी हो तो उसे परिवर्तन जरूर करना है क्योंकि दीवाली के दिन कोई न कोई दृढ़ संकल्प करना है, तो यही दृढ़ संकल्प करो कि हम दिल्ली को राजधानी बनायेंगे, जो सब राजधानी में आवें। तो आप सब निमित्त जरूर बनेंगे। बस दृढ़ संकल्प करो कि दिल्ली को सतयुगी की राजधानी बनायेंगे, बनना ही है। ओम् शान्ति।

# दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

## वरदान प्राप्त करने का साधन - दान देना

1) वरदान तब मिलता है जब पूरा दान करते हैं। बाबा ने ईश्वरीय अनादि नियम बनाया है, एक दो तो दस पाओ, धरती को एक दाना देते हैं तो 100 देती है, अब पूछो मैं पूरा दानी बना हूँ? भक्ति में भी ईश्वर अर्पणम् या कृष्ण अर्पणम् करते हैं, तुम किसी मनुष्य को दान नहीं देते, तुम सब मुझ शिवबाबा को दान करते हो तब मेरे से तुम्हें वरदान मिलता है। ज्ञान का, शक्ति का, गुणों का, यह खजाना तुम बांटते हो। जितना-जितना औरों को बांटते उतना स्वयं भी भरपूर होते हैं। एक दिया 100 पाया। इतना जमा होता है, जिसे कहते हैं वरदान मिलता है। तो बाबा हमें दान देकर फिर हमसे दान कराता है। फिर वह और ही 100 गुणा भरतू होता है। तो जो भरतू होता है वह है वरदान। जैसे किसी गरीब को दान दिया उसने सिगरेट पी लिया तो हमारे ऊपर बोझ चढ़ा, इसी तरह बाबा ने मुझे दान दिया और अगर बाबा के मिले दान का उपयोग ठीक नहीं किया तो वरदान की बजाए श्राप हो जाता है। यह निर्णय शक्ति चाहिए। मान लो हमने किसको मुरली सुनाई, ज्ञान दिया, बाबा की याद का अनुभव कराया, जिससे आत्मा को बड़ी खुशी हुई, उसने हमें दुआ दी, यहाँ तक तो ठीक, लेकिन जब मैंने कहा ये मेरे से बहुत प्रभावित हुआ, बहुत खुश हो गया, तो यह जमा नहीं किया, स्वीकार कर गंवा दिया। अहम् भाव आया तो बैलेन्स बराबर। जो जमा किया वह माइनस हो गया - खत्म। वह दान वरदान नहीं रहा। ऐसे ही मैं कोई की बहुत मीठी सेवा कर रही हूँ, बहुत अच्छी तरह समझाती हूँ, समझाते-समझाते आत्मा की स्थिति में स्थित हो जाती हूँ उसे भी अनुभव कराया, शान्ति का लाइट अवस्था का साक्षात्कार कराया, परन्तु दूसरे क्षण उसने मेरे देह-अभिमान की अवस्था देखी तो एक तरफ हाइएस्ट स्टेज, दूसरे तरफ एक क्षण में लोएस्ट स्टेज। तो क्या सोचेगा? वरदान भी दिया फिर वापस भी ले लिया - क्या हुआ? जमा तो नहीं हुआ ना।

तो हरेक अपने से पूछे कि मैंने अपनी जीवन त्यागी बनाई है? त्याग की परिभाषा बहुत बड़ी है, जितना हम त्यागी बनेंगे उतना ही तपस्वी बनेंगे। बाबा ने कहा योग न लगने का कारण नाम-रूप में फंसते हैं, देही-अभिमानी नहीं बनते, यह हमारी चाभी है, देखना है हम कहाँ तक देही-अभिमानी बने हैं?

2) अगर मेरे में जिद्द का स्वभाव है, नाम तो है जिद, लेकिन छोटा जिद का स्वभाव क्या मुझे वरदान प्राप्त करायेगा? जैसे मुझे कोई कहता - ये कार्य करना है, मैं जिद के स्वभाव के कारण कहती मैं नहीं कर सकती। लेकिन यह कार्य बाबा का है, वह मुझे करने के लिए कहता, उससे अनेक आत्माओं को हर्ष मिलता, उत्साह मिलता, कितना लाभ होगा, ना कर दिया तो उन सबका बोझ मेरे ऊपर चढ़ गया। नाम है जिद, परन्तु उसमें कितना नुकसान हुआ।

3) बाबा ने हमें अमृतवेले से रात तक हर कर्म करने के जिम्मेवार बनाया है, किसी कारण से अमृतवेले नहीं उठते। परन्तु ये भी सोचा कि मेरे उठने से कितनों को प्रेरणा मिलती है? ये प्रेरणा मिलना ही वरदान है। ऐसे ही अनासक्त-पन की जीवन देखकर सब सीखेंगे। थोड़ी घड़ी के लिए मेरे में सुस्ती है, तबियत के कारण या मेरी नेचर सुस्त है, क्या मेरी सुस्ती की नेचर औरों को प्रेरणा देगी या उसे बेमुख करेगी? सुस्ती के कारण मैं किसी को बेमुख करूँ या मैं अपना मूड आफ अर्थात् स्वीच आफ करके अन्धकार कर दूँ, तो उसका कितना बुरा प्रभाव दूसरों पर पड़ेगा। कई तो बड़े फलक से कहते हैं कि आज मेरी मूड आफ है। जैसे बाबा ने कहा ओम् शान्ति। हम कहते मूड-शान्ति। अगर कोई कारण से मूड आफ भी हुई तो उसे बाबा की याद से सेकण्ड में खत्म कर दो। आज साइन्स की शक्ति वाले सेकण्ड में अन्धकार से प्रकाश कर देते हैं, हम साइलेन्स की शक्ति से मूड शान्त नहीं कर सकते?

4) हम सब ओपेन थियेटर में बैठे हैं, हमें सारी दुनिया देख रही है, हम बाबा के बच्चे हैं, नूरे रत्न हैं, आंखों के तारे हैं, बाबा ने हमें नयनों पर बिठाया है, हम आप साधारण नहीं है। लेकिन हम असाधारण अलौकिक हैं, हमारा बाबा निराला, हम भी निराले, बाबा हमेशा कहते बड़े तो बड़े छोटे शुभान अल्ला, आप सब बाबा की छत्रछाया, शक्ति के नीचे बैठे हो, नहीं तो आज का जमाना बहुत खराब है, आप सब एक दृढ़ संकल्प लेकर बाबा की गोद में आये हो। तो अपने से रुह-रिहान करनी है कि हमें बाप के समान बनना है। सम्पन्न बनना है, समीप रहना है।

5) जग को परिवर्तन करने वालों को पहले स्वयं को परिवर्तन करना है। मेरे जीवन का हमेशा लक्ष्य रहता बाबा की पहले दिन की श्रीमत है - आज्ञाकारी, फरमानबरदार, वफादार। दूसरा है त्याग, तपस्या और सेवा इन सबका आधार है - श्रीमत। श्रीमत में रहने से हमारी तथा सर्व की सेवा है, इसमें ही कल्याण है। ईश्वरीय मर्यादा कहती है तुम्हें अन्तर्मुख रहना है, मेरी पसन्दी है बाहर्मुखता, अगर मैं अन्तर्मुख न रहूँ तो दूसरों को कैसे कहेंगे। तो ये कौन सी मैंने सर्विस की? बाहर्मुखता की मेरी नेचर है, अन्तर्मुखता बाबा की श्रीमत है, तो मुझे आज्ञाकारी बनना है। अगर नहीं रहती हूँ तो क्या मैंने आज्ञा का पालन किया या उल्घंन किया? आज्ञा पालन करने में बाप का आशीर्वाद मिला, न करने में श्राप। ओम् शान्ति।